'पत्र' सम्पादक के नाम

आपके यहाँ की पुस्तक ज्ञानामृत मानव जीवन के लिए बहुत ही उपयोगी है। इसी ज्ञानामृत पुस्तक से ही मुझे जीवनदान मिला है। इस मायावी संसार में मैंने अनेक प्रकार की पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ीं, देखीं, उनका अनुभव किया। अपना अमूल्य धन नाना प्रकार की पत्र-पत्रिकाओं में बर्बाद किया लेकिन उन सभी में सबसे बेहतर पत्रिका मुझे ज्ञानामृत ही लगी क्योंकि इस पत्रिका के अन्दर ज्ञान रूपी अमृत का भण्डार-ही-भण्डार है। ये पुस्तकें कितनी ही पुरानी क्यों न हों लेकिन ये पुरानी-सी नहीं लगती हैं। इस पत्रिका से ही मानव जाति का कल्याण है। अत: इस पुस्तक का, प्रत्येक घर-परिवार में होना अति आवश्यक है।

सन् 1999 में, किसी कारणवश मैं केवल दो मास ज़िला जेल के अन्दर बंद था। ज़िला कारागार में मुझे नर्क एवं स्वर्ग का अहसास हुआ। नर्क में रहते हुए ज्ञानामृत पुस्तक ने मुझे अज्ञान से निकाल कर ज्ञान रूपी मार्ग पर चलने को बाध्य किया। इतना ही नहीं, ज़िला कारागार में मेरा स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन बिगड़ता ही जा रहा था और मेरा आत्मविश्वास एवं आत्मबल निरन्तर टूटता ही जा रहा

था। रातों की नींद उड़ गई थी। घबराहट एवं बेचैनी भी काफी बढ़ गई थी। जिन्दगी में पूरी तरह से मायूसी छा गई थी। ज़िला जेल में रहते हुए, शिव बाबा की कृपा से ज्ञानामृत पुस्तकें मुझे प्रसाद के रूप में एक बुजुर्ग सज्जन से मिल गईं थीं। घनघोर संकट की घड़ी में ये पुस्तकें मेरे लिये संजीवनी बूटी की तरह काम करने लगीं। मेरी बीमारी, मन की चिन्ताएँ, घबराहट, बेचैनी ज्ञानामृत पढ़ने के उपरान्त काफी कम होती चली गई। नींद भी बिना दवा के इस्तेमाल के सही आने लगी। मेरा मन ज्ञानामृत पुस्तक पढ़ने के उपरान्त काफी प्रसन्न रहने लगा। पुरानी पुस्तकें होने के बावजूद कोई भी ज्ञानामृत पुस्तक पुरानी नहीं लग रही थी। हर पुस्तक में एक नया अहसास था। इसी पुस्तक से मुझे ज़िला कारागार में जीने की राह मिली जोकि मेरे लिए एक जीवनदान था।

सम्पादक महोदय जी, राजयोगिनी दादी माँ जानकी जी से पत्र के माध्यम से गुजारिश करना चाहूँगा कि आज समय की माँग है, यह पत्रिका प्रत्येक घर-परिवार में होनी चाहिए। ज्ञानामृत पत्रिका को पढ़ने के उपरान्त छोटी-बड़ी सभी समस्याएँ दूर हो जायेंगी।

आज महँगाई के दौर में, इस पुस्तक का एक वर्ष का खर्चा मात्र सत्तर रुपये है जबकि केवल डॉक्टर की फीस, एक बार की एक सदस्य की सौ या दौ सौ रुपया या इससे भी अधिक है। आने-जाने का एवं दवाई का खर्चा अलग से है। लेकिन ज्ञानामृत पुस्तक से परम आनन्द की प्राप्ति हो सकती है। सत्तर रुपये में पूरा घर-परिवार आनन्द ले सकता है। घर-परिवार ही नहीं, आप इस पुस्तक को आस-पड़ोस में देकर पुण्य लाभ भी कमा सकते हैं। अत: ज्ञानामृत पुस्तक सबसे सस्ती, सबसे अच्छी, यह दवा का ही नहीं, डॉक्टर की तरह पूरी देखभाल के साथ-साथ दुआओं का भी कार्य करती है।

अत: सम्पूर्ण भारतवर्ष में ज्ञानामृत पुस्तक को प्रचार-प्रसार के माध्यमों एवं अन्य साधनों से आन्दोलन के रूप में घर-घर पहुँचाना चाहिए जिससे मानव जाति का कल्याण हो सके।

– मनोज कुमार गुप्ता,
फतेहाबाद (उ.प्र.)

❑❑